

भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव पत्रकार सम्मेलन (26.11.2021)

भाकृअनुप-राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र, पुणे में भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव के अवसर पर एक संवाददाता सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नवभारत टाइम्स के श्री दीपक काले और हडपसर एक्सप्रेस के श्री दिनेश चंद्रा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। शुरुआत में ही डॉ. आर.जी. सोमकुवर (निदेशक, भा.कृ.अनु.के.प. -रा. अंगूर अनु. के., पुणे) ने भा.कृ.अनु.के.प.-रा. अंगूर अनु. के., पुणे की प्रमुख शोध उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने किसानोन्मुखी कार्य, प्रयोगशाला से भूमि कार्यक्रम, विस्तार विंग, अंगूर की गुणवत्ता में सुधार, निर्यात क्षमता में वृद्धि, प्रजनन कार्यक्रम, जैव प्रौद्योगिकी उपकरण और इसके अनुप्रयोगों, संस्थान द्वारा जारी विभिन्न किस्मों जैसे मंजरी श्यामा, मंजरी मेडिका और मंजरी नवीन पर जोर दिया। इस संस्थान का चरणवार फसल और पोषक तत्व प्रबंधन और टीम प्रयास। डॉ. एस.डी. रामटेके (प्रधान वैज्ञानिक, पादप शरीर क्रिया विज्ञान) ने ग्रेप नेट पर जोर दिया। ग्रेप नेट यूरोपीय संघ के देशों को निर्यात के लिए ताजा अंगूर की निगरानी के लिए देश में स्थापित पहला इंटरनेट आधारित अवशेष ट्रेसबिलिटी सॉफ्टवेयर सिस्टम है। यह सॉफ्टवेयर अंगूर उद्योग में सभी हितधारकों के के इनपुट के साथ अपेडा द्वारा विकसित किया गया था। डॉ ए. के. शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक, बागवानी) ने कृषि में नैनो टेक्नोलॉजी, ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ब्लॉक चेन जैसी नई तकनीकों के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर, श्री प्रहलाद मोरे, लीड-प्रोडक्ट सेफ्टी और श्री सुशील देसाई, बायर क्रॉप साइंस लिमिटेड के लीड-प्रोडक्ट स्टीवर्डशिप को भी ड्रोन तकनीक और अंगूर में इसके अनुप्रयोग का प्रदर्शन करने के लिए आमंत्रित किया गया था। बैटरी से चलने वाला मल्टी-रोटर ड्रोन एक स्वचालित फिलिंग टैंक की सुविधा दे सकता है जिसे सटीक फ़ील्ड आकारों से मेल खाने के लिए डिज़ाइन किया गया है और ऊंचाई सेंसर के माध्यम से इलाकों का पता लगाता है जो फ़ील्ड के ऊपर एक निरंतर दूरी बनाए रखते हैं। ड्रोन एप्लिकेशन को कम पानी की आवश्यकता होती है और अधिकांश मानव-नेतृत्व वाले छिड़काव की "कवर ऑल" रणनीति की तुलना में समाधान आवेदन की समग्र मात्रा को कम करता है। डीजल से चलने वाले स्प्रेयर को इलेक्ट्रिक बैटरी से चलने वाले ड्रोन से बदलने से भी ईंधन की बचत होती है। उपज क्षमता बढ़ाने से परे, मल्टी-रोटर ड्रोन हाथ से छिड़काव की तुलना में एक तेज, सुरक्षित अनुप्रयोग रणनीति पेश करते हैं। हालांकि, ड्रोन एप्लिकेशन का मुख्य लाभ उन जगहों पर सही मात्रा में उपचार लागू करने की क्षमता है जहां इसकी आवश्यकता है।

Press Conference of India International Science Festival (26.11.2021)

A press conference was organized on the occasion of India International Science Festival at ICAR-National Research Centre for Grapes, Pune. On this occasion, Sri Deepak Kale from Navbharat Times and Sri Dinesh Chandra from Hadapsar Express were invited as Chief Guest. In the very beginning, Dr. R.G. Somkuwar (Director, ICAR-NRC for Grapes, Pune) briefed about the salient research achievements of ICAR-NRC for Grapes, Pune. He laid emphasis on farmer oriented work, lab to land program, extension wing, quality improvement of grapes, increased export potential, breeding program, biotechnological tools and its applications, different varieties released by the institute *i.e.* Manjari Shyama, Manjari Medika and Manjari Naveen, stage wise crop and nutrient management and team effort of this institute. Dr. S.D. Ramteke (Principal Scientist, Plant Physiology) gave emphasis to Grape Net. Grape Net is the first internet based residue traceability software system established in the country, for monitoring of fresh grapes for export to the European Union countries. This software was developed by APEDA with inputs from all the stakeholders in grape industry. Dr. A. K. Sharma (Principal Scientist, Horticulture) highlighted the importance of novel technologies like nanotechnology, drones, Artificial intelligence and block chain in agriculture.

On this occasion, Mr. Prahlad More, Lead-Product Safety and Mr. Sushil Desai, Lead-Product Stewardship from Bayer Crop Science Limited were also invited to demonstrate the drone technology and its application in grapes. A battery-powered multi-rotor drone can feature an automatic filling tank designed to match exact field sizes and trace terrains through height sensors that maintain a constant distance above fields. Drone application needs less water and reduces the overall volume of solution application compared with the “cover all” strategy of most human-led spraying. Replacing a diesel-powered sprayer with an electric battery-powered drone also conserves fuel. Beyond elevating yield potential, multi-rotor drones present a faster, safer application strategy compared to hand spraying. The main advantage of drone application, however, remains the ability to apply just the right amount of treatment in the locations where it’s needed.

